विषय - "हिन्दी" पाठ 1

"विमल इन्दु की विशाल किरणें"

विधा - 'कविता' कवि - श्री जयशंकर प्रसाद जी

प्रश्न कविता की प्रथम आठ पंक्तियाँ लिखिए?

कविता => विमल इंदु की विशाल किरणें,
प्रकाश तेरा बता रही है।
अनादि तेरी अनन्त माया,
जगत को लीला दिखा रही है।।

प्रसाद तेरी दया का कितना,
थे देखना हो तो देखो सागर।
तेरी प्रशंसा का राग प्यारे,
तरंगमालाएँ गा रही है।।

प्रश्न शब्दार्थ लिखिए?

शब्द		अर्थ
अनादि	=>	जिसका कोई आरंभ न हो।
अनंत	=>	जिसका अंत न हो।
तरंगमालाएँ	=>	लहरों का समुह।
स्मित	=>	मुस्कान।
निनाद	=>	ध्वनि, गुंजार।
दयानिधि	=>	दया का भंडार, ईश्वर।
मनोरथ	=>	अभिलाषा।
आशा	=>	भरोसा।

Scanned by CamScanner

प्र०3. मौखिक प्रश्न [सोंचो और बताओ] रचनात्मक मूल्यांकन

प्र०1 => चँद्रमा की किरणें किसका प्रकाश बताती है?
उत्तर => चँद्रमा की किरणें ईश्वर का प्रकाश बताती हैं।

प्र०2 => तरँग मालाएँ क्या कर रही है?
उत्तर => तरँगमालाएँ ईश्वर की प्रशंसा का राग गा रही है।

प्र०3 => नदियाँ क्या कर रही है?
उत्तर => नदियाँ ईश्वर के हँसने की धुन में निनाद कर रही हैं।

प्र०4 => सागर किसका प्रतीक है?
उत्तर => सागर ईश्वर की कृपा का प्रतीक है।

प्र०5 => कविता में क्या भाव व्यक्त किए गए हैं?
उत्तर => ईश्वर सर्वत्र है, संसार में सर्वशक्तिमान ईश्वर की ही माया है तथा ईश्वर की कृपा से सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है।

प्र०4 लिखित प्रश्न [संकलित मूल्यांकन]

प्र०1 जगत को लीला कौन दिखा रहा है?
उत्तर => जगत को लीला सर्वशक्तिमान ईश्वर की माया जिसका कोई आदि है न अंत है जो सर्वत्र विद्यमान है ऐसे ईश्वर जगत को लीला दिखा रहे हैं।

प्र०2 प्रशंसा का गीत कौन गा रहा है?
उत्तर => प्रशंसा का गीत समुद्र की तरँगमालाएँ गा रही है।

प्र०3 नदियाँ किस धुन में हैं?
उत्तर => नदियाँ हँसने की धुन में हैं।

प्र०4 किसकी दया से मनोरथ पूर्ण होता है?
उत्तर => ईश्वर की दया से मनोरथ पूर्ण होता है।

प्र०5 आशय स्पष्ट करो ->

तुम्हारा ---- चँद्रिका को ॥

आशय-> उपरोक्त पँक्तियों का आशय यह है कि हे प्रभु किसी को आपकी मुस्कान देखना हो तो वह चँद्रमा की चाँदनी में उसे देख सकता है। तात्पर्य यह है कि जिस समय चँद्रमा अपनी स्वच्छ चाँदनी धरती पर बिखेरता है तब ऐसा प्रतीत होता है, जैसे सम्पूर्ण वातावरण मन्द-मन्द मुस्कुरा रहा है।

Scanned by CamScanner

Book Activity

1) सही (✓) पर निशान लगाओ ?

1) ईश्वर ☐ सर्वव्यापी है।
2) ईश्वर ☑ की महिमा अनंत है।
3) ईश्वर को दया ☐ का सागर कहा जाता है।

2) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए ?

(1) संसार
(2) ईश्वर
3) दया
(4) रचयिता

3) वाक्य बनाओ ?

अनंत ⇒ ईश्वर की महिमा अनंत है।
मनोरथ ⇒ ईश्वर हमारे सभी मनोरथ पूर्ण करते हैं।
कृपा ⇒ ईश्वर की कृपा से हम सब जीवित हैं।
किरणें ⇒ चंद्रमा की किरणें शीतल होती हैं।
तरंग ⇒ समुद्र की प्रत्येक तरंग सुंदर लगती है।

4) भाषा कौशल ⇒ (a) पर्यायवाची शब्द ?

चंद्रमा ⇒ इंदु, सुधाकर, सोम
संसार ⇒ विश्व, जगत, जग।
समुद्र ⇒ सागर, जलधि, सिंधु
नदी ⇒ तटिनी, सरिता, तरंगिणी
विष्णु ⇒ दामोदर, लक्ष्मीपति, लक्ष्मीनारायण।

(b) रेखांकित शब्दों को बहुवचन में बदलकर पुनः लिखें ?

क) तेरी प्रशंसा का राग तरंगमालाएँ गा रही हैं।
ख) नदियाँ निनाद करती हुई जा रही हैं।
ग) देवता मनोरथों को पूर्ण करते हैं।

Scanned by CamScanner

3) भिन्नार्थक शब्द के अर्थ लिखकर वाक्य बनाओ ?

शब्द	अर्थ		वाक्य
(क) प्रसाद	कृपा	=>	ईश्वर का प्रसाद हमेशा हम पर रहें।
प्रासाद	महल	=>	मैं० भव्य प्रासाद देखकर दंग रह गया।
(ख) जगत्	संसार	=>	जगत् में सब कुछ नश्वर है।
जगत	कुएँ का चबुतरा	=>	कुएँ की जगत बहुत ही सुंदर है
(ग) पड़ना	दखल देना	=>	हमें किसी की लड़ाई के बीच नहीं पड़ना चाहिए।
पढ़ना	पढ़ाई करना	=>	हमें प्रतिदिन पढ़ना चाहिए।
(घ) अनंत	जिसका कोई अंत नहीं।	=>	भगवान की लीला अनंत है।
अनंतर	तुरंत बाद	=>	तुम्हें उसके अनंतर ही वहाँ पहुँच जाना है।

रचनात्मक कौशल [गृहकार्य Home work)

1) कविता कंठस्थ करो ?

2) जयशंकर प्रसाद जी की अन्य कविता लिखो ?

3) प्रकृति पर लिखी गई किसी अन्य कविता को लिखो।

4) पाठ के सभी अभ्यास याद करो।

— × —

Scanned by CamScanner